January, **2016**

ang kirit

A reflection of Radhi Kayastha

akhil bhartiya radhi kayastha sangathan
C-5, 2nd Floor, RK Tower, Plot No 21-22, Sector 4, Vaishali, Ghaziabad, UP
website: www.abrks.com email: info@abrks.com Contact: +91 120 322 3419

अंग किरीट

अखिल भारतीय राढ़ी कायस्थ संगठन की मासिक पत्रिका

वर्ष : १, अंक : १, जनवरी २०१६

संपादक : प्रभात कुमार घोष ■ अभिनंदन कुमार सिन्हा

सम्पादकीय

नमस्कार !

'अंग किरीट' का प्रवेशांक आपके हाथों में रखते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है । 'अंग' यानि पुराना भागलपुर प्रमंडल, और इतिहास में अति विस्तृत भूगोल, जिसके संबंध में इतिहास यह लिखता है—अंग में मानभूमि, वीरभूम, मुर्शिदाबाद और संताल परगना—ये सभी इलाके सम्मलित थे। इतिहास इसे राढ़ प्रदेश के नाम से भी जानता है । राढ़ यानी लाल मिट्टी का देश । और किरीट का अर्थ 'मुकुट' होता है । यहां किरीट से मतलब इसकी महान सांस्कृतिक परंपरा से है । हमें इस पत्रिका के माध्यम से अपने राढ़ी समाज को फिर से मुकुट बनाना है । यहां पर हम सभी के मन में एक सवाल यह आ सकता है कि जब पूरा विश्व मानवीय मूल्यों के लिए एकजुट होकर एक ग्राम की शक्ल ले रहा है, तो ऐसे में एक जातीय पत्रिका निकालने का उद्देश्य क्या हो सकता है ? हमारे शास्त्रों में लिखा है—''आत्मनम् विधि अर्थात अपने को जानो। और अपने आप को जानने के लिए यह भी सबसे जरूरी यह है कि हम अपने परिवार, समाज को जानें । पर आज के समय में संचार के इतने सारे साधन होने के बावजूद क्या हम अपने आप को जान पा रहे हैं ? हमारा राढ़ी समाज, जो एक परिवार की तरह है, टूटता चला जा रहा है । और जब एक परिवार ही टूट रहा हो तो आप समाज, राज्य और देश को जोड़ने की बात भी कैसे सोच सकते हैं ? यह पत्रिका एक आधार है अपने भावों, विचारों को अभिव्यक्त करने का । इस पत्रिका के माध्यम से हम यह जान पायेंगें कि हमारे इस समाज का गौरवशाली इतिहास क्या रहा है, अनेक गाँवों में जो राढ़ी परिवार बसे हुए हैं, उस गाँव की विशेषताएं क्या हैं, हमारे समाज के व्रत-त्योहारों का हमारे जीवन में क्या महत्व है, और सबसे महत्वपूर्ण यह है कि एक-दूसरे के प्रति जो कटाव की स्थिति बन रही है, उसे जोड़ने का प्रयास है यह पत्रिका । स्वामी विवेकानन्द ने कहा है—''भारतीय आदर्श हमें अपनी आवश्यकताओं को छोटा-से-छोटा कर जीवन को सफलतापूर्वक व्यतीत करना सिखाती है । इन्हीं आदर्शों की अमिट छाप हमारे पर्व-त्योहारों, रीति-रिवाजों में परिलक्षित होती है, जैसे धान की बालियाँ और सरसों के फूल, बांस की पत्तियाँ और डाल के फूफड़ । इन सारी परम्पराओं से हमारी संस्कृति की पहचान बनी हुई है । इस पत्रिका में हमने कुछ स्थायी स्तंभ रखे हैं—मेरा गांव-मेरा देश, व्रत-त्योहार, अंग-चौराए Kids Corner इत्यादि। 'मेरा गांव-मेरा देश' में एक ओर जहाँ हमारी कोशिश होगी कि हर अंक में हम एक ऐसे गाँव को प्रस्तुत करें, जहाँ राढ़ी कायस्थ परिवार न केवल बसे हों, अपितु उस गाँव की विशेषताओं एवं समाज में उनके योगदानों को भी प्रस्तुत किया जा सके, वहीं Kids Corner में हम बच्चों की रचनाएं, ज्ञान-विज्ञान की बातें प्रकाशित करेंगे, ताकि उनके व्यक्तित्व को एक नया आयाम मिल सके। ठीक उसी तरह 'अंग-चौरा' स्तंभ में हम सामयिक विषय पर एक अंगिका लेख प्रस्तुत करेंगे, जिससे न केवल आज के समाज का स्वरूप पता चल पायेगा, बल्कि लोग अपनी मातृभाषा अंगिका के प्रति भी जुड़ाव महसूस कर सकेंगे । इसी तरह 'व्रत-त्योहार' स्तंभ के अन्तर्गत एक बंग्ला कथा का लिप्यांतर प्रस्तुत होगा ।

इस पत्रिका की सफलता का दायित्व हम सभी राढ़ी बांधवों के ऊपर है । आप की प्रतिक्रिया, आप के सुझाव, 'अंग किरीट' की कठिन यात्रा को सहज और सुखद बनायेंगे । आप हमें संवाद भेजें । हम आपके संवादों को देश के कोने-कोने तक पहुँचाने के लिए प्रतिबद्ध हैं । नव वर्ष एवं मकर संक्रांति की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ यह प्रवेशांक आपके समक्ष है ।

—प्रभात कुमार घोष

—अभिनंदन कुमार सिन्हा

इस अंक में

- President's message 2
- General Secretary's message 2
- मेरा गाँव, मेरा देश 4
- अंग चौरा 4
- व्रत-त्योहार 5
- अंग : एक परिचय 5
- Kids Corner 6
- विविध

'अंग किरीट' से जुड़े सभी सदस्य अवैतनिक हैं । इस पत्रिका का लक्ष्य एक ही है—अव्यवसायिक तौर पर साहित्य और समाज की सेवा । किसी प्रकार के विवाद का निपटारा सिर्फ गाजियाबाद (उ.प्र.) में ही होगा ।

Jaideo Kumar Sinha
President ABRKS
Niwasi: Sujapur, NathNagar, Bhagalpur
Presently at Indrapuram, Delhi NCR

Dear members,

On this auspicious occasion, I wish you all a Happy Makar Sankranti.

It is commendable to see that our new team has started working for the betterment of ABRKS with all its might and force. This newsletter “Ang Kirit” is one of the initiatives.

Let me remind you all, we have just entered the 10th year of Vijaya Milan Celebration. To make this anniversary of completing a decade as an organization, remarkable, we need your support in every sense.

I put forward this humble request to everyone, kindly take some time out from your busy schedule for our ABRKS family. Now the time has come to connect each and every Radhi Kayastha family across the country and overseas.

We have inherited a very strong social and cultural bondage with high traditional value. Our main aim is to make the younger generation aware of these values.

To achieve the above stated goals, we are trying day in day out to connect with each and every member of this one big family and request them to contribute for the upliftment of our society.

I wish you all, the best to this day and ahead.

With Regards,

------------------------------O--------------------------------

Amarendra Kumar Ghosh
General Secretary, ABRKS Delhi
+91 9871 003459
ghoshamarendra@gmail.com
Native: Baghras, Teghra Lakhanpur
Presently at: Dwarka, Delhi

Greetings!

Firstly let me wish you along with your near and dear ones a very happy new year 2016. With the sense of responsibility we the new team of Executive Body wish to announce another step to reach near you and interact more frequently with you by the mean of ABRKS Monthly magazine named **“Ang-Kirit”.**

“Ang-Kirit” the name of this magazine was chosen after a long brain storming session among Newsletter committee over the many names suggested by members. Let me explain the committee’s conclusion to finalize the name, here **“Ang”** is indicating a sense of belongingness of each Radhi Kayastha from Ang Pradesh Bhagalpur. We claim ourselves as Bengali Kayastha but broadly speak Angika as our dialect. **“Kirit”** in hindi literature is used for crown, we want to see our

=

-‰ó l¢]´¢ó l¢= = = = 0= = = ==´¶=¤¢¨¦s=ú²³-¨¦=ÂÀÁÆû

magazine on the top of all periodicals read by Angika bhasi Radhi Kayastha. The name "Ang-Kirit" will be backed by punch line – **"Reflection of Radhi Kayastha"** OR **"Radhi Darpan"** in hindi.

I would like to take this opportunity to thanks Mr. Jaideo Kumar Sinha, President for his leadership and guidance under which the year 2016 will become remarkable. Allow me also to extend my sincere greetings to all previous Executive Bodies of ABRKS for wonderful journey so far. The strong footprint at Delhi NCR is itself an achievement for ABRKS. I think there were a lot we learnt in all these years and this is a year to reflect and consolidate the organization. We understand that ABRKS is on a mission of betterment of Radhi Kayastha and human being in general.

Let us recall the Vijaya Milan 2015 celebrated on 1st November, 2015 in presence of its patrons, executives, members along with their family members. The organizing committee had taken care of complete program along with pick and drop facility to nearest Metro Station. There was nice breakfast arrangement to begin the day. Purpose of starting the day with common breakfast at the venue was to get chance to meet and great attending families. Executives at Registration Desk were busy marking attendance of attendees. The program formally started by lighting the auspicious Diya by senior citizen along with president and general secretary.

President Prashant Kumar Das has welcomed the participating families and addressed them all followed by key note addresses by guests. At the same time in other hall a Painting Competition took place followed by Quiz Competition. Kids and youngsters have performed cultural program on stage. There was an extended lunch break in the program and people resumed back in the hall.

It was time to reveal our Annual Souvenir by core team. Awards were distributed to winning participant at Paining Competition, Quiz and Cultural Activities. ABRKS had facilitated meritorious kids of the RK society followed by felicitation to senior citizen. ABRKS had also presented gifts for newly married couple and new born babies. At this point the event was converted into Annual General Meeting and members had decided upon the new Executive Body.

It was a great where all RK families participated in a day of togetherness. We are looking forward for many such events in a year at Delhi NCR. We are planning for Holi Milan 2016 at Chhatterpur, details will be available on website soon. We have also planned to rotate the monthly Executive Body Meeting venue to different corner of Delhi NCR, in this series we are doing our January meeting at Faridabad.

Once again wishing all a remarkable 2016…!

Warm Regards,

-‰ó।¢]´¢ó।¢= = = = P= = = ==´¶=¤¢¨¦S=ú²³-¨¦=ÂÀÁÆû

मेरा गाँव-मेरा देश

सैदापुर

प्रान्तीय और सांस्कृतिक समन्वय का अनूठा उदाहरण है मेरा गांव सैदापुर। सैदापुर गांव झारखण्ड के गोड्डा जिले में है, जो कि कजिया नदी के तट पर स्थित है। प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर सैदापुर के प्रान्तीय व सांस्कृतिक समन्वय का गांव कहने से तात्पर्य यह है कि यह गांव एक तरफ जहां अपने राज्य और साथ में लगने वाले पश्चिम बंगाल और बिहार के मूल्यों और आदर्शों को एक सूत्र में पिरोने कि कोशिश करता है, वहीं दूसरी तरफ अन्य वर्ग के लोग, जैसे कि अनुसूचित जाति और खासकर अनुसूचित जनजाति बाहुल्य राज्य की परम्पराओं को दर्शाता है।

जैसे कि अगर हम जगधात्री पूजा और काली पूजा की बात करें तो यह मूलरूप से बंगाल की पूजा है, और बंगालियों द्वारा की जानेवाली पूजा कही जाती है, परन्तु इन दोनों पूजाओं को इस गाव में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

मा जगधात्री, जो कि मा दुर्गा का ही रूप है, की पूजा बिहार में मनाये जाने वाले छठ पूजा की अगली सुबह यानि अटमी से प्रारम्भ होती है। सैदापुर में मा जगधात्री का बहुत बड़ा मण्डप है, जहां अटमी के दिन मूर्ति स्थापित करके पूजा किया जाता है और यह तीन दिन तक चलता है। पूजा के साथ-साथ ही तीन दिन तक बड़ा मेला लगता है। इस पूजा का महत्व यह है कि यह एक ब्राâण परिवार के द्वारा लगभग सौ साल पहले प्रारम्भ किया गया था, जो कि निरन्तर चला आ रहा है। यह पूजा सिर्फ मेरे गांव में ही नहीं, अपितु दुमका और भागलपुर प्रमंडल में भी प्रसिद्ध है। ऐसा माना जाता है कि सैदापुर की ही परम्पराओं से प्रभावित होकर लक्ष्मीपुर डेम, जो कि बांका जिला में स्थित है, में यह पूजा प्रारम्भ हुई। इसके अलावा एक काली स्थान है, जहां मूर्ति स्थापित करके पूजा की जाती है। इस पूजा में भव्य मेला लगता है और रंगारंग कार्यक्रम भी होता है।

अब अगर हम अपने गांव पहुंचने की सुविधाओं की बात करें तो गोड्डा जिले से उत्तर गोड्डा-पीरपैंती मार्ग से पश्चिम दिशा में पक्की सड़क सीधी गांव तक जाती है। इसके अलावा गांव में पानी और बिजली की सुविधा भी वर्तमान है, जोकि गांववासी के रोजमर्रा का मुलभूत साधन है। गांव से गोड्डा शहर पहुंचने के लिए ऑटो कि सुविधा है, जो केवल समय-समय पर चलती रहती है। वैसे तो जरूरत की चीजें गांव में ही उपलब्ध है, पर बड़ी खरीदारी या अच्छी चिकित्सा की सुविधा के लिए 20 मिनट से आधे घंटे में शहर जाया जा सकता है।

मेरे गांव में दो ही राढ़ी कायस्थ परिवार है और लगभग चार सौ ब्राâण परिवार होंगे। राढ़ी कायस्थ के पहले परिवार से, जिस परिवार से मैं जुड़ा हूं, डॉ. कमल कृष्ण घोष हैं, जिनका चिकित्सा के क्षेत्र में बड़ा योगदान है। वो एशिया के विख्यात âदय रोग विशेषज्ञ माने जाते है। हालांकि उनका परिवार काफी समय पहले ही सैदापुर से परासी चला आया था। उनके अलावा मेरे गोरोबू डॉ. श्याम सुन्दर घोष का हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने हिन्दी साहित्य में अनेकों रचनाएं कीं, जिसमें से Þबच्चन का परवर्ती काव्य : एक समालोचनात्मक विÜलेशणß और संक्षिप्त कहानियों के संकलन में से 'शेरनी का दूध' सराहनीय रहे।

गांव ने अनेकों शिक्षक और इंजीनियर भी पैदा किये, जिन्होंने गांव के विकास में कई महत्वपूर्ण योगदान दिए। इसी क्रम में राढ़ी कायस्थ का दूसरा परिवार इस गांव को शिक्षक प्रदान करता है।

अगर मै अपने स्मरण की बात करूं तो एक समय ऐसा भी था जब गांव से शहर तक जाने के लिए कोई साधन नहीं था । मात्र एक साधन बैलगाड़ी हुआ करती थी। मैं खुद गाव से शहर तक ½5 किलोमीटर लगभग½ पैदल अपने माता पिता के साथ गया था। आज यह गांव विकास के पथ पर अग्रसर होते हुए किराये या निजी वाहन से वहां पहुंचने के लिए पक्की सड़क भी मुहैया कराता है।

मेरा गांव और यहां के लोग उत्तरोÜार विकास के पथ पर यू ही आगे बढ़ते रहें, और दूसरों के लिए पथप्रदर्शक बनें, ऐसी कामनाओं के साथ.....

-प्रभात कुमार घोष
पुत्र स्व. प्रमोद चन्द्र घोष ½जट्टू½
ग्राम-सैदापुर, जिला-गोड्डा, झारखण्ड

अंग-चौरा

भाषा : अंगिका

के कहतै कि ई भागलपुर वहा भागलपुर छेकै

आयकों भागलपुर यानी वेदकाल रों अंगदेश कभियो हेनों नै रहलै, जेहनों आय बनी गेलों छै । पहाड़, जंगल, नदी, सें भरलों पुरलों अंगप्रदेश आय उजाड़, बंजर, रेगिस्तान रं बनलों जाय रहलों छै । खेतों में शहर आरो कारखाना खुली रहलों छै, वहाँ कोयल, पड़ोकी आरो सुग्गा के नै, भारी मशीन आरो जेनेटर के शोर उठै छै। जे जंगल-पहाड़ बची गेलों छै, वहाँ बन्दूक-गोली के आवाज गूंजतें रहै छै । भय कें भी भय लागें । कभियो ई जंगल, पर्वत के बीच भंगल नाम के जनजाति के निवास होय छेलै, तभिये तें अंगप्रदेश के एक नाम भंगलपुर भी पड़ी गेलों छेलै आरो धीरें-धीरें वहा भागलपुर होय गेलै । तें बुद्धकालीन भंगलपुर में तखनी चानन नदी, बड़आ नद्दी कोशिये नद्दी रं उमड़ै छेलै । आबें कहाँ । खाली बालुवे बालू, डैमों में जेटा पानी छै, बस वहा पानी । नदी तें रेगिस्तान होय गेलों छै । नद्दी पर बालू के बाजार लागी गेलों छै । कोशी के छोड़ी दौ, तें क्यूले के की हालत छै, मयूराक्षिये के हौ रूप कहाँ रही गेलै । रहतै कहाँ सें । जोंन पहाड़ सें ई सब नद्दी निकलै छै, वही विनाश पर छै । भागलपुर के कै एक पहाड़ तें जेना खतमे होय गेलों छै। शाहकुण्ड के पहाड़ सिनी, जेकरों छाती पर अंगप्रदेश के इतिहास खुदलों छेलै— अवशेष बनी कें रही गेलों छै । कटै के तें सुनै छियै कि कहलगाँव के कासड़ियो पहाड़ काटलों जाय रहलों छै । वहा काँसड़ी पहाड़, जे पर दुर्वासा मुनि रहै छेलै । दुर्वासाहै मुनि के नै, कहौल, ऋषि, अष्टावक्र आरो परशुरामो के यहा पहाड़-जंगल घोंर-द्वार रहलै । ई कोनो झुटफुस्सी बात थोड़े छेकै, संस्कृत के ग्रंथों में उल्लेख छै । पुराण कथा प्रमाण छेकै । इतिहास में दर्ज छै, ई बात । आबें जबें पहाड़े कटी जैतै कि धीरें-धीरें अंगप्रदेश के इतिहासो खत्म होय जैतै । हमरा नै भूलना चाहियों कि हमरों नद्दी, पहाड़, जंगल नै खाली हमरों जीवन लेली, हमरों संस्कृतियो के प्राण वायु होय छै । ई सिनी के खत्म होय के मतलब छै कि आदमी के साथ ओकरों भव्य इतिहास के गौरव गाथाओ के मरबों । जो कोशी के कजरी एकदम्मे सें मिटी जाय तें 'महुआ घटवारिन' के कथा की होतै। नदद्दी छै तें कथाओ कें ताकत छै । आय हमरा सिनी पर बाजार आरो भोग के निशाँव एत्तें चढ़लों होलों छै, कि विरोध में कुच्छू बोलवों बेकार, मतर नीति के पक्षों में नै बोलवों, कौनें अच्छा कहतै ?

—डॉ. अमरेन्द्र
(लेखक सौ के करीब पुस्तकों के रचयिता एवं हिन्दी-अंगिका के सशक्त हस्ताक्षर हैं)

व्रत-त्योहार

अपने राढ़ी समाज में अलग-अलग महीनों में अलग-अलग व्रतों-त्योहारों की परम्परा रही है, जिनका समाज में बहुत ही महत्व है । वैज्ञानिक एवं स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से भी ये व्रत-त्योहार हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं । कई बार बंग्ला भाषा की जानकारी के अभाव में अपने समाज की महिलायें चाहकर भी व्रत-कथा का पाठ नहीं कर पातीं । इसी परेशानी को दूर करने का प्रयास इस स्तंभ द्वारा स्मारिका में किया गया था, जिसकी काफी संतोषजनक प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुईं । इसी श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए इस बार ओरण्य षष्ठी, जिसे जामाई साठ के नाम से भी जाना जाता है, की कथा का हिन्दी लिप्यांतर प्रस्तुत है । आशा है, पूर्ववत आपका सहयोग मिलता रहेगा । धन्यवाद—**संपादक**

ओरण्य (जामाई) षष्ठी

एक देशे एक वामनी छिलो, तार तीन छेले आर तीन बो छिलो। छोटो बो बोड़ोई नोला, से सब जिनिस चूरी करे खेतो, आर वाड़ीर कालो बेड़ालेर नामे दोष दितो । सेई बेड़ाल छिलो माँ षष्ठीर वाहन, कोरे से रोज-रोज माँ षष्ठी के गिये बोले दितो ।

किछु दिन पोरे छोटो, बो पोयाति होलो दश मास दश दिने एकटि चांदेर मतो छेले हलो राते छेले कोले कोरे छोटो बौ सुये छिलो, सोकाल बेला उठे देखे छेले नेई । तखनि सोकले चारिदिके खुजलो, किन्तु छेले कोथाउ पाउया गेलो ना।

एमोन कोरे छोटो वौउयेर सात छेले, आर एक मेये होलो, किन्तु सवाई गेलो, खूँजे आर पाउया गेलो ना। बाड़ीते सवाई छोटो बौ के राक्षसी बोलते लागलो । छोटो बौ ताई सुने मोनेर दुखे उ घेन्नाय वने चोले गेलो।

वने बोसे-बोसे छोटो वौ खूब काँदछे, देखे माँ षष्ठीर बोड़ो दया होलो। तिनी बूड़ी वामूनिर वेश धोरे छोटो बौ के जिगेश कोरलेन, तुई काँदछिस केनो माँ, तोर कि हये छे ? छोटो बौ बल्ले "माँ ! आमि बोड़ो पापिष्ठा, आमार सात छेले आर एक मेये होये छिलो, तार एकटिउ नाई । संसारे सोकलेई आमाय घेन्ना कोरे, सेई जन्ये बने एसेछि ।"

माँ षष्ठी बोललेन, "उ अभागीर बेटी तूई सब जिनिस चूरी कोरे खेये बेड़ालेर नामे दोष दितिस केनो ? सेइ जन्नेई तो आमार बेड़ाल तोर छेलेदेर निये आमाके दिये छे ।"

तोखन छोटो बौ काँदते-काँदते माँ षष्ठीर पा जोड़िये धोरे बल्ले, "माँ खमा कोरो, आर कि कोल्ले आमार पापेर खंडन होवे ता बोलो ।"

माँ षष्ठी तोखन बल्लेन-"जा, उई उखाने एकटा मोरा पोचा बेड़ाल पोड़े आछे, एक हांड़ि दोई ऐने, उई बेड़ालेर गाये ढेले दिये, जिबे कोरे आबार हाँड़िते तूले निये आय । तोवे तोर छेले पाबि ।"

छोटो वौ छेलेर लोभे ताई कोरले । तोखन माँ षष्ठी तार छेलेदेर आर मेये के एने दिलेन, दिये बोल्लेन, "एदेर कोपाले ई दोइयेर फोंटा दाउ। आर कोखनउ चूरी कोरे खेये बेड़ालेर नामे दोष दिउ ना, बेड़ाल के लाथि मेरो ना, छेले देर बाँ हाते मेरो ना, मोरे बोले गाला गाली दिउ ना।

जेष्ठ मासेर शुक्ल षष्ठीते पिटूलिर कालो बेड़ाल गोड़े, पिटूलिर कोंगन गोड़े, फल मूलेर बाटा साजिये, छ टा पान, छ टा सूपारि, छ टा कोला, आर बाँस पाताय होलूदेर नेकड़ा जोड़िये, छ गाछा सूतो पाकिये ताते बाँधवे, एई सूतो के साट् सूतो बोले । तार पोर तेल-हलूद दिये ओरण्य षष्ठीर पूजो कोरवे । पूजोर पर सेई साट् सूतो प्रत्येक छेलेर कोपाले छूंइये

(शेष पृष्ठ ६ पर....)

अंग : एक परिचय

अंगिका भाषा / अंग का नामकरण

१. पराक्रमी सम्राट बली के पुत्र अंग के नाम पर इस महाजनपद का नाम "अंग" हुआ—मत्स्य पुराण—४८/२५

२. भगवान शंकर के क्रोध के कारण कामदेव के अंग का जहाँ दहन हुआ, वह क्षेत्र "अंग" कहलाया—बाल्मीकि रामायण—१/३२

३. शरीर की सुन्दरता के कारण इस महाजनपद के लोग अपने को अंग कहते थे—बौद्धग्रन्थ "दीर्घनिकाय" टीका

महाअंग जनपद का प्राचीनतम उल्लेख

१. अंग जनपद की स्थापना मध्य ऋग्वेद काल के पूर्व में ही हो चुकी थी । —राधा कृष्ण चौधरी/हिस्ट्री ऑफ बिहार/१९५८ पृ० ३३०

२. गन्धारिभ्यो मूजवद्भ्योङ्गेभ्यो मगधेभ्यः—अथर्ववेद—५/२२/१४

अंग जनपद का भूगोल/सीमा

१. अंग जनपद पुराने भागलपुर और मुंगेर तक विस्तृत था । पूर्णिया की सीमा इसी महाजनपद के अन्तर्गत थी । गंगा का उत्तर वाला हिस्सा अंगुत्तराप/उत्तर अंग/कहलाता था ।

पार्जीटर/जर्नल ऑफ एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल/१८९७, ९५

२. अंग का प्रसिद्ध नगर "विटंकपुर" समुद्र के किनारे बसा था ।

—कथासरित सागर—२५/३५, २६/११५, ८२/३-१६

३. अंग की सीमा बैजनाथ धाम/देवघर/से भुवनेश्वर तक विस्तृत थी ।

—शक्ति संगम तंत्र, सप्तम पटल

४. कलिंग भी अंग राज्य में सम्मिलत था और तंत्र भी अंग की सीमा एक शिव-मंदिर से दूसरे-शिव-मंदिर तक बतलाता है । यह एक महाजनपद था । अंग में मानभूमि वीरभूम, मुर्शिदाबाद और संताल परगना—ये सभी इलाके सम्मलित थे—डॉ० देव सहाय त्रिवेद/प्राङ-मौर्य बिहार/पृ० ७१

अंग महाजनपद का वैश्विक विस्तार

१. भारत के पूरब के देशों में आर्य-उपनिवेश-काल में जो उपनिवेश कायम हुए, उनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान चम्पा/अंग/उपनिवेश का है, जिसका नाम अंग जनपद के लोगों ने चम्पा नगरी के नाम पर रखा था।

—राधा कृष्ण चौधरी/हिस्ट्री ऑफ बिहार/ पृ० १५

२. राजा अंग ने समस्त पृथ्वी को जीत कर अश्वमेघ यज्ञ किया था/अंग समन्तं सर्वतः पृथ्वीं जयन् परीयायाश्वेन च मेध्येनेजे इति—ऐतरेय ब्राह्मण—३९/८/२१

३. हिन्द-चीन में समुद्र के किनारे चम्पा राज्य की स्थापना द्वितीय शती में हुई । यहाँ भी राज्य का चम्पा नाम इसलिए प्रचलित हुआ कि राज्य स्थापित करने वाले हिन्दू चम्पा (भागलपुर) से आये थे । इन सभी द्वीपों का नाम अंगद्वीप था ।

—डॉ० रामधारी सिंह दिनकर/संस्कृति के चार अध्याय/पृ० २०९

महाजनपदों में अंग का स्थान

बौद्धकाल के प्रसिद्ध बौद्धग्रन्थ में जिन सोलह महा जनपदों का उल्लेख आया है, उसमें "अंग" सबसे प्रथम स्थान पर है । ध्यातव्य हो कि इस सूची में "विदेह" या "मिथिला" का नामोल्लेख तक नहीं है ।

—अंगुत्तरनिकाय, प्रथम भाग पृ० १९७ सं० भिक्षु जगदीश कश्यप

लिपियों में अंगलिपि का स्थान

बौद्धग्रन्थ "ललितविस्तर" में उल्लखित ६४ लिपियों में अंगिका का स्थान चौथे स्थान पर है, जबकि विदेह जिसे मैथिली सिद्ध करने का प्रयास हुआ है, का स्थान चालीसवें पर उल्लखित है—ललित विस्तर, सं० पी० एल० वैद्य/पृ० ८८

(शेष अगले अंक में....)

Kids Corner

DID YOU KNOW?

❖ India's maiden mission to Mars,Mangalyan or Mars Orbiter Completed 100 days in the Martian orbit on New Year's Day in 2015.

❖ Kiran Kumar was appointed Secretary Department of space and ISRO Chairman.

❖ The year ending was the 40th year of the Launch of India's first satellite, Aryabhatta , with a Russian rocket.

❖ Indian Railways initiated discussions with ISRO on the Possibility of using GPS-Aided Geo AugmentedNavigation (GAGAN) for Safety at unmanned railway Crossing.

❖ GAGAN is also meant to provide accurate navigation Services over the Bay of Bengal,southeast Asia,the Indian Ocean, Middle East and African region.

❖ To date, so rocket-not including sounding rockets-have been launched form Sriharikota.

Presented By: Praneet Pravin

पहल सिन्हा, कक्षा : U.K.G.

QUIZ

I. 22nd June- is the longest day and the shortest night of the calendar year. What is it called?

Ans- Summer Solstice

II. Iron-ore, manganese, copper, aluminium & gold; what kind of minerals are these?

Ans- Metallic Minerals

III. Which state of India has popular towns named-Coimbatore, Madurai, Trichy and Salem?

Ans- Tamil Nadu

IV. What is the name of the country which is also a continent?

Ans- Australia

V. Where is River 'Yellow' located?

Ans- China

VI. Who planned and designed New Delhi city?

Ans- Sir Edwin Lutyens

VII. Who is the first person to score 1,000 runs in India?

Ans-Pranav Dhanawade

VIII. What is the name of Kolkata International Airport?

Ans- Netaji Subhash Chandra Bose International Airport

IX. How many active volcanoes have been located on earth?

Ans- More than 1500

X. By what other name was India Gate known as earlier?

Ans- The 'All India War Memorial'

Presented By: Pratyush Pravin

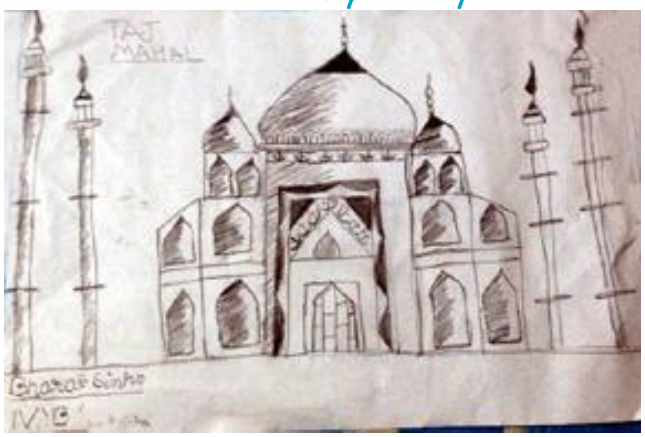

भारत सिन्हा, कक्षा : 4

पृष्ठ ५ का शेष... डान हाथे बेंधे देवे । तार पर कोथा सूने फल-मूल किंवा फलार खावे, भात खेयो ना ।

एई सब कोल्ले पुआतीदेर छेले पिले मोरे ना । एई कोथा बोले माँ षष्ठी चोले गेलेन । तोखन छोटो बौ छेले-मेये निये घोरे एलो, एसे सोवाई के एई सोब आश्चर्यो कोथा बोल्ले । सोबाई आश्चर्यो होय गेलो। तोखन सोब जायेरा छोटो बौउयेर काछ थेके षष्ठीर पूजोर नियम जेने निले, तार पोर थेके तारा नियोमित षष्ठीर पूजो कोरते लागलो ।

छोटो बौउ छेले मेयेदेर खूब घटा कोरा बिये दिये बौउ-जामाई आनले, जेष्ठ मासे षष्ठीर दिन जामाईयेर कोपाले दोउयेर फोंटा दिये आम-कांठालेर वाटा दिले ।

तार पोर अन्य-अन्य बौउयेरा छेले-मेयेदेरे बिये दिये मेये-जामाई घोरे आनले । क्रोमे ऐ दिन टा जामाई वा षष्ठी बाटा दिन होय उठलो ।

छोटो बौउये चारि दिके सूख्याति होते लागलो । सोबाई ओरण्य षष्ठीर पूजो कोरते लागलो ।

—प्रस्तुति : सावित्री घोष
शिप्रा सनसिटी, गाजियाबाद

Executive Body 2015-17

Name	Designation	Current Locaton	Native Place	Mobile No
Jaideo Kumar Sinha	President	Indrapuram	Sujapur	9958885338
Amarendra Kumar Ghosh	General Secretary	Mahavir Enclave	Bagharas, Teghra L	9871003459
Abhinandan Kumar Sinha	Treasurer	Mehrauli	Rupsa	9971295833
Manas Kumar Mitra	Vice President	Lajpat Nagar	Lakhanpur, Bgp	9811114326
Amit Kumar Das	Vice President	Sarai Rohilla	Manoharpur	9313515114
Paresh Kuamr Das	Vice President	Pratap Vihar	Jagatpur	9650138816
Prashant Kumar Mazumdar	Vice President	Uttam Nagar	pathakdih	9811568104
Sanjay Kumar Sinha	Joint Secretary	Viashali	Sujapur	9818860992
Ranjay Kumar Sinha	Joint Secretary	Rohini	Sujapur	9811255673
Ajit Kumar Das	Joint Secretary	Chhattarpur	Kasba	9350214515
Ranjan Kumar Ghosh	Joint Secretary	Uttam Nagar	Milki, Bihpur	9310211139
Prashant Kumar Das	Executive Member	Crossing Republic	Jagatpur	9717489785
Manoj Kumar Sinha	Executive Member	Dwarka	Manoharpur	9999137064
Parmendra Kumar Sinha	Executive Member	Faridabad	Kasba	9910510842
Harendra Kumar Mitra	Executive Member	Faridabad	Gangaldai	9810297868
Nirupam Kumar Sinha	Executive Member	Indrapuram	Rupsa	9310570751
Rajesh Kumar Ghosh	Executive Member	Kalkaji	Sabalpur, Bounsi	9717321785
Rajive Ranjan Raj	Executive Member	Kaushambi	Rampur Dih	9971127009
Som Ranjan	Executive Member	Kaushambi	Jagatpur	9313009668
Raj Kumar Ghosh	Executive Member	Madanpur Khadar	Ratanpura	9899997641
Satyajit Majumdar	Executive Member	Mehrauli	Bhuriya	9871349065
Saurabh Ghosh	Executive Member	Mohan Garden	Chara Bargaon	9868531823
Sadhan Kumar Das	Executive Member	Pitampura	Dumramah	9910108978
Madan Mohan Sinha	Executive Member	Pratap Vihar	Pathakdih	9910634032
Prabhat Kumar Ghosh	Executive Member	Pratap Vihar	Saidapur, Godda	9910411699
Manoj Kumar Sinha	Executive Member	Ramesh Nagar	Jagdishpur	9810669751
Nishchhal Kumar Das	Executive Member	Sagarpur	Jagatpur	9311454788
Praveen Kumar Das	Executive Member	Sahibabad	Sujapur	8130298190
Niranjan Kumar Ghosh	Executive Member	Uttam Nagar	Milki, Bihpur	9873400387
Tushar Kant Ghosh	Executive Member	Uttam Nagar	Lakhanpur, Bgp	9968296534
Aditya Kumar Ghosh	Executive Member	Vaishali	Tarapur	9810392243
Prashant Krishna	Executive Member	Viashali	Mahiyama	9910201976

Above Executive Body is fifth body since its inception. Tenure of this body is from 2015 to 2017. All members of the executive are volunteer and non-salaried.

Executiion Committee 2015-16

1. Consolidation Committee	Goal
1 Saurabh Ghosh 2 Vacant 3 Vacant 4 Jaideo Kumar Sinha 5 Amarendra Kumar Ghosh	We at ABRKS wish to complete member's information database along with their family photographs. Also, we wish to know how he/she can contribute to the society at his/her convenience. We want to know if any one can participate / contribute in cultural activites / events.
2. Fund Raising Committee	**Goal**
1 Manas Kr Mitra (Proposed) 2 Tushar Kant Ghosh 3 Vacant 4 Jaideo Kumar Sinha 5 Amarendra Kumar Ghosh	We need to estimate Operational Expenses and fund for larger goal of the society. Fund would most critical dimention in the acheivement of set objectives. Need to find out way for regular funding and increasing cash inflow
3. Event Committee	**Goal**
1 Manoj Kumar Sinha 2 Vacant 3 Vacant 4 Jaideo Kumar Sinha 5 Amarendra Kumar Ghosh	To see the opportunity to of organizing more events other than Vijaya Milan. Also, to analyze cost of the event, minimum number of participation and contribution required Place, Venue, Conveyence, timing, weather etc
4. Newsletter Committee	**Goal**
1 Prabhat Kumar Ghosh 2 Abhinandan Kr Sinha 3 Vacant 4 Jaideo Kumar Sinha 5 Amarendra Kumar Ghosh	We have started releasing newsletter from January2016 onwards. We want to interact with our members and also with other local bodies regularly. We may share news, message, important EBM decisions etc with all. We will keep members column for their view.
5. Alliance Committee	**Goal**
1 Ajit Kumar Ghosh 2 Vacant 3 Vacant 4 Jaideo Kumar Sinha 5 Amarendra Kumar Ghosh	We as a social orgnization wish to and feel obligation to meet the requirement of the under priviledged members of the society. In order to provide the needful we are not self-sufficient. Let us find out and tie-up with NGOs who help with Education / Medical and Marriage fund support.

Above mentioned Committees are working in line with the strategy decided by ABRKS Executive Body 2015-17. All the members to these committees are volunteer and non-salaried.

ang kirit

A reflection of Radhi Kayastha

Year: 1 / Issue: 1 **January2016**

You may please share your feedback and material for printing at: newsletter@abrks.com